पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.07.2026 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

43वें वर्ष में युवा उद्घोष का प्रवेश

आप सभी को हार्दिक बधाई

वर्ष-43 अंक-03 आषाढ़-2083 दयानन्दाब्द 202 01 जुलाई से 15 जुलाई 2026 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.07.2026, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

जम्मू कश्मीर की वादियाँ वेद मन्त्रों से गूंज उठीं

संस्कारित युवा ही राष्ट्र निर्माण करेगे –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

बधाई–केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की शिक्षक टीम आर्य समाज जानी पुर जम्मू में

जम्मू, रविवार 14 जून 2026 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् जम्मू–कश्मीर द्वारा आर्य समाज जानी पुर कॉलोनी जम्मू में आयोजित आर्य युवक चरित्र एवं व्यक्तित्व निर्माण शिविर का भव्य समापन समारोह उत्साह, अनुशासन एवं राष्ट्रभक्ति के वातावरण में सम्पन्न हुआ। समारोह में दिल्ली से पधारे परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि चरित्र निर्माण आज देश की बहुत बड़ी चुनौती है सुसंस्कारी युवा पीढ़ी ही राष्ट्र का उज्जवल भविष्य है। विशेष रूप से आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर के प्रधान श्री चुन्नीलाल, मनोहर लाल बब्बर, अजय सहगल, अरुण आर्य, डॉ सत्यप्रिय आर्य,वेद शास्त्री, कपिल बब्बर, रूही बब्बर, अमित महाजन तथा सोनिया आनंद सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। पिंकी आर्य व नंदनी के गीतों ने सभी का मन मोह लिया है। समापन समारोह में शिविरार्थियों ने अपने प्रशिक्षण का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में बच्चों ने योगासन, शक्ति प्रदर्शन, लाठी संचालन, तलवार प्रदर्शन एवं विभिन्न शारीरिक कौशलों का भव्य एवं रोचक प्रदर्शन प्रस्तुत कर उपस्थित जनसमूह की भरपूर सराहना प्राप्त की। शिविर के प्रशिक्षण कार्य का संचालन प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता, अरुण आर्य, गौरव सिंह, ऋतम आर्य तथा सोनिया रावत ने किया। मुख्य अतिथि विधायक श्याम लाल शर्मा ने बच्चों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि ऐसे शिविर युवाओं में अनुशासन, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता तथा राष्ट्रसेवा की भावना का विकास करते हैं। उन्होंने शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि वे इस शिविर से प्राप्त अच्छी यादों एवं श्रेष्ठ आदतों को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। उन्होंने युवाओं को सफलता के लिए "Dedication, Devotion और Decision" के त्रिसूत्र को अपनाने का संदेश दिया। साथ ही उन्होंने अपनी मातृभाषा एवं स्थानीय डोगरी भाषा को प्राथमिकता देने और उसके संरक्षण हेतु प्रयासरत रहने की अपील की। उन्होंने शिविर के सफल आयोजन के लिए आयोजकों एवं प्रशिक्षकों की भी भूरि–भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि चरित्रवान, संस्कारित एवं राष्ट्रनिष्ठ युवाओं का निर्माण ही परिषद् का प्रमुख उद्देश्य है और ऐसे शिविर युवा पीढ़ी को वैदिक संस्कृति, नैतिक मूल्यों एवं व्यक्तित्व विकास से जोड़ने का प्रभावी माध्यम हैं। अंत में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् जम्मू–कश्मीर के प्रांतीय अध्यक्ष सुभाष बब्बर ने सभी अतिथियों, प्रशिक्षकों, सहयोगकर्ताओं एवं शिविरार्थियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि जम्मू–कश्मीर में इस प्रकार के चरित्र एवं व्यक्तित्व निर्माण शिविरों का आयोजन भविष्य में भी प्रतिवर्ष किया जाता रहेगा, ताकि अधिकाधिक युवाओं को संस्कार, अनुशासन एवं राष्ट्रसेवा के मार्ग पर अग्रसर किया जा सके। समापन समारोह राष्ट्रभक्ति के नारों,वैदिक संस्कृति के संदेश तथा युवाओं के उत्साहपूर्ण संकल्पों के साथ सम्पन्न हुआ।

दिल्ली चलो दिल्ली दिल्ली चलो दिल्ली दिल्ली चलो दिल्ली

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 48वे स्थापना दिवस के अवसर पर

स्वामी श्रद्धानंद बलिदान शताब्दी समारोह

रविवार 6 सितम्बर 2026 प्रातः 9 बजे से दोपहर 2.00 बजे तक

स्थानः श्री बृज मोहन मुंजाल सभागार, आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट –1,नई दिल्ली

प्रीति भोज दोपहर 2.00 बजे। आप सादर आमंत्रित हैं।

भवदीयः– अनिल आर्य महेन्द्र भाई धर्मपाल आर्य

आर्यसमाज की स्थापना और सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों की रचना महान कार्य

– मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

ऋषि दयानन्द को अपने बाल्यकाल में सच्चे ईश्वर की खोज तथा मृत्यु पर विजय प्राप्ति के उपाय जानने की प्रेरणा हुई थी। उन्हें इस सम्बन्ध में अपने किसी पारिवारिक सदस्य व विद्वानों से समाधान प्राप्त नहीं हुआ था। अपनी भांकाओं वा प्रश्नों के समाधान के लिये उन्होंने अपने पितृगृह को छोड़कर एक सच्चे धर्म जिज्ञासु की तरह देश के अनेक भागों में जाकर धार्मिक विद्वानों तथा योगियों की संगति की थी अथवा उनकी भारण ली थी। अपने उद्देश्य की पूर्ति तक वह एकनिश्ठ होकर ईश्वर एवं मृत्यु विशयक रहस्यों को जानने का प्रयत्न करते रहे। ऐसा करते हुए वह बालक मूलशंकर से संन्यासी स्वामी दयानन्द बने थे और अपने देशाटन, विद्वानों की संगति, अध्ययन व योग में प्रवीणता प्राप्त कर वह सच्चे योगी बने थे। योगी बनने पर मनुश्य को ईश्वर का सत्यस्वरूप प्रायः ज्ञात हो जाता है। सिद्ध योगी बनने के बाद भी उनमें विद्या प्राप्ति की इच्छा बनी रही। वह सच्चे विद्या गुरु की खोज में थे। उनकी इच्छा सन् 1860 में मथुरा के प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी गुरु विरजानन्द सरस्वती जी का सान्निध्य पाकर व उनसे विद्या प्राप्त कर पूर्ण हुई। अपने गुरु की प्रेरणा से ही उन्हें देश व संसार से अविद्या दूर करने की प्रेरणा वा आज्ञा मिली थी जिसे उन्होंने स्वीकार किया था। उन्होंने अपने गुरु स्वामी विरजानन्द जी को उनकी इच्छा को पूर्ण करने का आश्वासन भी दिया था। गुरु से सन् 1863 में विदा लेकर स्वामी दयानन्द जी विद्या का प्रकाश करने के लिये कार्यक्षेत्र में प्रविश्ट हो चुके थे। उन्होंने आगरा में कुछ महीने रहकर विद्या का प्रचार किया और अपने भावी प्रचार की योजना तय की थी। यहां रहकर ही उन्होंने वेदों की लिखित प्रति प्राप्त करने के प्रयत्न किये थे। इसके लिये वह ग्वालियर, भरतपुर, करौली व जयपुर आदि स्थानों पर भी गये थे। सम्भवतः राजस्थान के भरतपुर या करौली में उन्हें चार वेदों की प्रतियां प्राप्त हुई थी जिसकी उन्होंने परीक्षा की थी और उन्हें सृष्टि की आदि में ईश्वर से प्राप्त सब सत्य विद्याओं से युक्त ज्ञान पाया था। स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से उन्होंने वेदांगों का अध्ययन किया था। इनके पास आने से पूर्व भी वह प्राचीन धर्मग्रन्थों व भाास्त्रों को ढूंढ–ढूंढ कर उनका अध्ययन किया करते थे। इस ज्ञान व अनुभव के आधार पर उन्होंने वेदों के मन्त्रों के सत्य अर्थों को जाना व समझा था। वेदों के आधार पर ही उन्होंने अपने धर्म सम्बन्धी सभी सिद्धान्तों का निश्चय किया था। उन्हें अविद्या तथा विद्या का विवेक था। इसी कारण से वह मूर्तिपूजा की निरर्थकता को समझ सके थे तथा इसके साथ ही उन्होंने अवतारवाद की मिथ्या मान्यताओं, मृतक श्राद्ध तथा फलित ज्योतिश आदि की निरर्थकता को भी जाना था और इनके खण्डन में प्रवृत्त हुए थे।

वेदों को प्राप्त कर उनका अध्ययन करने तथा अपने गुरु के सान्निध्य में प्राप्त ज्ञान के आधार पर वह अविद्या व विद्या के यथार्थस्वरूप को जानने के साथ साथ उनके समय में विद्यमान मत–मतान्तरों के ग्रन्थों, मान्यताओं तथा सिद्धान्तों में निहित अविद्या को भी वह जान सके थे। मनुष्य व समाज के लिये अत्यन्त हानिकारक अविद्या को पहचान कर उन्होंने इसका खण्डन करना भी आरम्भ किया था। वह धार्मिक सिद्धान्तों पर बहस, चर्चा व मन्थन करने से भागते नहीं थे अपितु उसका स्वागत करते थे और किसी भी जिज्ञासु व मत–पन्थ के आचार्य से हर समय अपने व परकीय मत, मान्यताओं व सिद्धान्तों पर सत्यासत्य की परीक्षा व चर्चा करने के लिए तत्पर रहते थे। वह अकेले ऐसे धर्माचार्य व विद्वान हुए हैं जिन्होंने महाभारत युद्ध के बाद दूसरे मतों के आचार्यों से सबसे अधिक भाास्त्रार्थ व भाास्त्र चर्चायें कीं और उन सब में उनका अपना पक्ष ही सफल रहा। उन्होंने वेदों के आधार पर जिन सिद्धान्तों को अपनाया था वह सब अखण्डित वा अकाट्य थे। आज तक भी कोई विद्वान व मताचार्य उनके किसी सिद्धान्त का वेद प्रमाण व तर्क एवं युक्तियों के आधार पर खण्डन नहीं कर पाया है। वेदों के सभी सिद्धान्त जो उन्होंने प्रचारित किये व जिसे उन्होंने अपने ग्रन्थों व वेदभाश्य आदि में प्रस्तुत किया है, वह आज भी अखण्डित एवं सत्य सिद्ध हैं व सत्य सिद्ध हो रहे हैं। यह बात अलग है कि आज भी मत–मतान्तरों के आचार्यों ने अपनी अविद्यायुक्त मान्यताओं व परम्पराओं को छोड़ा नहीं है और वेद की सत्य मान्तयाओं को स्वीकार कर उन्हें आचरण में लाना आरम्भ नहीं किया है।

महर्षि दयानन्द अपने गुरु को देश व संसार से अविद्या दूर करने हेतु प्रयत्न करने का वचन देकर आये थे। उन्होंने मौखिक प्रचार से सत्य मान्यताओं का मण्डन और असत्य मान्यताओं का खण्डन करना आरम्भ किया था। वह जो प्रचार करते थे वह सब युक्तियों व तर्कों पर आधारित होता था। वह वेद और मनुस्मृति आदि भास्त्रों के प्रमाण देते थे और उनके तर्कसंगत होने को सिद्ध भी करते थे। मौखिक प्रचार का प्रभाव सीमित क्षेत्र पर अल्प समय के लिए ही होता है। इसमें वृद्धि करने के लिये अपने भक्तों की प्रेरणा से उन्होंने सन् 1874 में वेदानुकूल मान्यताओं सहित धर्म विशयक अपने सभी विचारों से युक्त सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ को लिखवाना आरम्भ किया था। लगभग साढ़े तीन मास में ही उन्होंने वि व के अपने इस अपूर्व ग्रन्थ को पूर्ण कर लिया था। मनुश्य के मन में ई वर व सृश्टि सहित अपने आचार विचार, व्यवहार तथा कर्तव्य–अकर्तव्य को लेकर जो भी भांकायें व भ्रम हो सकते हैं, उन सबका निराकरण व समाधान ऋशि दयानन्द ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रका ा में किया है। सत्यार्थप्रका ा का वर्तमान स्वरूप एक प्रकार से एक आद ार्ा धर्म भाास्त्र का है जो सत्य को अपनाने और असत्य को छोड़ने की प्रेरणा करता है। सत्यार्थप्रका ा में धर्म, संस्कृति व जीवन से जुड़े प्रायः सभी विशयों की युक्ति व तर्क सहित विवेचन की पद्धति से परीक्षा की गई है और पाठकों को असत्य मान्यताओं के दोशों तथा सत्य मान्यताओं की सत्यता को बताते हुए सत्य को अपनाने की प्रेरणा दी गई है। सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर मनुष्य का चहुंमुखी बौद्धिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास वा उन्नति होती है। सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर ईश्वर, जीवात्मा तथा प्रकृति व सृष्टि का सत्य स्वरूप विदित होता है। पाठक का आत्मा सत्य को स्वीकार करता तथा असत्य मान्यताओं व परम्पराओं से परिचित हो जाता है। इसके बाद मनुश्य को अपने हित व अहित को देखकर उन्हें स्वीकार करना होता है। बहुत से लोग सत्य को जानने पर भी उसे स्वीकार नहीं कर पाते। ऐसे ही कारणों से सत्यार्थप्रका ा वि व का सर्वमान्य ग्रन्थ अभी तक नहीं बन पाया है परन्तु इसमें वह भाक्ति विद्यमान है जिससे यह भविश्य का सर्वमान्य धर्म विशयक ग्रन्थ होगा, यह नि चयपूर्वक कहा जा सकता है। एक ऐसा समय भी आ सकता है कि जब संसार के सभी लोग सत्यार्थप्रका ा व ऋशि के अन्य ग्रन्थों पंचमहायज्ञविधि, संस्कारविधि, ऋग्वेदादिभाश्यभूमिका व योगदर्शन आदि के आधार पर उपासना व देवयज्ञ अग्निहोत्र आदि किया करेंगे और अपने वर्तमान जीवन सहित भविश्य व परजन्म का भी सुधार करेंगे।

ऋषि दयानन्द ने वेदों पर आधारित सत्य मान्यताओं सहित सम्पूर्ण वेदों का प्रचार करने के लिये वेदों के भाश्य लेखन का कार्य भी किया। असंगठित रूप से कार्य करने पर उसका प्रभाव सीमित होता है तथा संगठित प्रचार से प्रभाव में गुणात्मक वृद्धि होती है। अपने अनुयायियों की प्रेरणा व मांग पर ऋशि ने वेदों के प्रचार व प्रसार के लिये एक संगठन को स्थापित करना स्वीकार किया था और चैत्र भाुक्ल पंचमी विक्रमी संवत् 1931 तदनुसार दिनांक 10 अप्रैल, 1875 को मुम्बई में आर्यसमाज के नाम से धर्म प्रचार तथा समाज व देश सुधार संगठन की स्थापना की थी। ऋषि दयानन्द ने ही आर्यसमाज के दस नियम बनाये हैं जो वेदानुकूल सिद्धान्तों पर आधारित होने सहित तर्क एवं युक्ति से अकाट्य सिद्ध हैं। यह ऐसे सिद्धान्त हैं कि जिसके समान हमें किसी धार्मिक व सामाजिक संगठन के सिद्धान्त उपलब्ध नहीं होते। इन नियमों में सभी सृश्ट पदार्थों तथा विद्या का आदि मूल परमेश्वर को बताया गया है। ईश्वर का सत्यस्वरूप व उसके गुण, कर्म व स्वभाव को भी आर्यसमाज के दूसरे नियम में प्रस्तुत किया गया है। आर्यसमाज का दूसरा नियम ई वर के सत्यस्वरूप का ज्ञान कराने वाला ऐसा नियम है जिसके समान विश्व साहित्य में ईश्वर के सत्यस्वरूप का ज्ञान व नियम उपलब्ध नहीं होता। आर्यसमाज के तीसरे नियम में वेदों को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक बताया गया है और सब मनुष्यों का उसको पढ़ना, आचरण करना तथा उसका प्रचार करना कर्तव्य व परमधर्म बताया गया है। एक नियम में अविद्या का नाश और विद्या की उन्नति की प्रेरणा भी की गई है। आर्यसमाज की व्यापक विचारधारा सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्वेदादिभाश्यभूमिका सहित ऋषि दयानन्द के वेदभाश्य में उपलब्ध होती है। उनको मानना व उनका प्रचार करना आर्यसमाज का उद्देश्य व कार्य है। आर्यसमाज यह कार्य अपने स्थापना काल से निरन्तर कर रहा है। इसका पूरे समाज, देश व विश्व पर प्रभाव भी पड़ा है। क्रान्तिकारी वीर सावरकर जी ने कहा है कि सत्यार्थप्रकाश की उपस्थिति में कोई मत व पन्थ अपने मत की भोखी नहीं बघार सकता। देश को आजाद कराने तथा देश में शिक्षा के प्रसार सहित सामाजिक कुरीतियों तथा अन्धवि वासों के उन्मूलन में आर्यसमाज की महती, अग्रणीय व प्रमुख भूमिका रही है। आर्यसमाज न होता तो हम आज वैदिक सनातन नित्य धर्म की क्या स्थिति होती, इसका अनुमान भी नहीं लगा सकते। आर्यसमाज ने सनातन वैदिक धर्म की रक्षा का महत्वपूर्ण कार्य भी किया है। आर्यसमाज की स्थापना सहित सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के लेखन व प्रचार से वेदों की रक्षा सहित प्राचीन भारतीय वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा हुई है और देश ने अनेक क्षेत्रों में उन्नति की है।

ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में लिखे शब्दों को लिख कर हम लेख को विराम देते हैं। वह लिखते हैं 'जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्यसमाज' के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना भारीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब–जने (समस्त देशवासी) मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त्त दश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता।' ओ३म् भाम्।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्वावधान में 7 जून से रविवार 14 जून 2026 तक आर्य कन्या शिविर एमिटी इंटरनेशनल स्कूल सेक्टर 44 नोएडा में आयोजित किया गया। शिविर में 120 युवतियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया समापन समारोह में बालिकाओं के व्यायाम प्रदर्शन के सुंदर कार्यक्रम सम्पन्न हुए एमिटी शिक्षण संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार चौहान, सांसद डॉ महेश शर्मा, ठाकुर विक्रम सिंह व आनंद चौहान ने अपनी शुभकामनाएं प्रदान की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव महेन्द्र भाई व वेद प्रकाश आर्य उपस्थित थे। आयोजक साध्वी उत्तमांयतीं, मृदुला चौहान, आरती खुराना आदि टीम कोहार्दिक बधाई।

युवा निर्माण शिविरों की उपयोगिता - व्यक्तित्व निर्माण की सशक्त प्रयोगशाला

आज के समय में जब युवा पीढ़ी अनेक प्रकार की चुनौतियों, आकर्षणों और भटकावों के बीच अपना मार्ग खोजने का प्रयास कर रही है, ऐसे समय में युवा निर्माण शिविर समाज और राष्ट्र के लिए आशा की किरण बनकर सामने आते हैं। ये शिविर केवल कुछ दिनों का प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं होते, बल्कि जीवन को नई दिशा, नई सोच और नया उद्देश्य प्रदान करने वाली सशक्त प्रयोगशाला होते हैं। मुझे स्वयं इस सत्य को अनुभव करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैं वर्ष 2006 में एक साधारण शिविरार्थी के रूप में युवा निर्माण शिविर से जुड़ा था। उस समय शायद मैंने भी नहीं सोचा था कि यही शिविर मेरे जीवन की दिशा और दशा बदल देंगे। शिविरों से प्राप्त संस्कार, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और संगठनात्मक प्रशिक्षण के बल पर मुझे पहले शिक्षक, फिर उप प्रधान शिक्षक, उसके पश्चात प्रधान शिक्षक के रूप में कार्य करने का अवसर मिला और आज मैं राष्ट्रीय संगठन मंत्री के दायित्व का निर्वहन कर रहा हूँ। यह केवल मेरी कहानी नहीं है, बल्कि ऐसे असंख्य साथियों की प्रेरणादायक यात्रा है जिन्हें केन्द्रीय आर्य युवक परिषद द्वारा आयोजित शिविरों ने आगे बढ़ाने का कार्य किया है। ऐसे अनेक युवक और युवतियां, जिन्हें कभी मंच पर खड़े होकर दो शब्द बोलने में भी संकोच होता था, आज बड़े–बड़े कार्यक्रमों का सफल संचालन कर रहे हैं, समाज और राष्ट्र के महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत हैं तथा अपने व्यक्तित्व और कार्यक्षमता से समाज में विशिष्ट पहचान बना चुके हैं। युवा निर्माण शिविरों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर बल देते हैं। शिविरों में प्रातःकालीन दिनचर्या, योग, यज्ञ, व्यायाम, खेल, बौद्धिक सत्र, समूह चर्चा, वक्तृत्व कला, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा नेतृत्व प्रशिक्षण जैसी गतिविधियां युवाओं के भीतर आत्मविश्वास और अनुशासन का संचार करती हैं। यहां युवाओं को केवल ज्ञान ही नहीं मिलता, बल्कि जीवन जीने की कला भी सीखने को मिलती है। शिविरों में प्राप्त प्रशिक्षण से युवाओं में नेतृत्व क्षमता, निर्णय लेने की योग्यता, संगठन भावना, समय प्रबंधन, आत्मानुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुण विकसित होते हैं। वे अपने व्यक्तित्व की कमजोरियों को पहचानकर उन्हें दूर करने का प्रयास करते हैं और अपने भीतर छिपी प्रतिभाओं को निखारते हैं। आज समाज को केवल शिक्षित युवाओं की नहीं, बल्कि संस्कारवान, चरित्रवान, राष्ट्रभक्त और नेतृत्वक्षम युवाओं की आवश्यकता है। युवा निर्माण शिविर इसी उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। ये शिविर युवाओं में सेवा, त्याग, समर्पण और राष्ट्र निर्माण की भावना का विकास करते हैं तथा उन्हें समाज के लिए उपयोगी नागरिक बनने की प्रेरणा देते हैं। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद द्वारा सन 1978 से आयोजित किए जा रहे युवा चरित्र एवं व्यक्तित्व निर्माण शिविरों ने लाखों युवाओं के जीवन को नई दिशा प्रदान की है। इन शिविरों से निकले अनेक कार्यकर्ता आज शिक्षा, प्रशासन, सामाजिक सेवा, व्यवसाय तथा विभिन्न राष्ट्रीय संगठनों में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। यह इन शिविरों की सफलता और उपयोगिता का सबसे बड़ा प्रमाण है। अंततः यही कहा जा सकता है कि युवा निर्माण शिविर केवल व्यक्तियों का निर्माण नहीं करते, बल्कि वे समाज, संगठन और राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करते हैं। यदि हमें एक सशक्त, संस्कारित और जागरूक भारत का निर्माण करना है, तो अधिक से अधिक युवाओं को ऐसे शिविरों से जोड़ना होगा। 'आज का शिविरार्थी ही कल का नेतृत्वकर्ता बनता है और आज का संस्कारित युवा ही कल के राष्ट्र का निर्माता होता है।'

श्रावणी पर युवा संस्कार अभियान चलाया जाएगा

9 दिन में 50 कार्यक्रम होगें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में **श्रावणी पर्व** पर **शनिवार दिनांक 8 अगस्त से रविवार 16 अगस्त 2026** तक **युवा संस्कार अभियान** चलाया जाएगा। मिशन 25 के अन्तर्गत लक्ष्य है 12 वर्ष से 25 वर्ष तक के युवाओ को आर्य समाज के साथ जोड़ना इसमें **यज्ञ, भजन, प्रवचन के कार्यक्रम रहेंगे** और **यज्ञोपवीत** दिए जाएंगे अपने क्षेत्र में यह 2 घंटे के कार्यक्रम अवश्य रखे।

निवेदकः

अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य	सौरभ गुप्ता	रामकुमार सिंह	अरूण आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय संगठन मन्त्री	प्रदेश संचालक	प्रदेश महामन्त्री

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 790वां वेबिनार सम्पन्न

जीवन में योग की महत्ता विषय पर गोष्ठी सम्पन्न'

योग जीवन जीने की कला है –आचार्य श्रुति सेतिया

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी बलिदान दिवस पर श्रद्धासुमन अर्पित किये

सोमवार 22 जून 2026,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में जीवन में योग की महत्ता विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 790 वाँ वेबीनार था। वैदिक विदुषी श्रुति सेतिया ने कहा कि आज के भागदौड़ भरे जीवन में तनाव, चिंता और असंतुलित दिनचर्या आम समस्या बन गई है। ऐसे में योग केवल एक व्यायाम नहीं, बल्कि स्वस्थ और संतुलित जीवन जीने की कला है। योग शरीर,मन और आत्मा के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। यह हमें शारीरिक शक्ति,मानसिक शांति और सकारात्मक सोच उत्पन्न करता है। नियमित योगाभ्यास से शरीर लचीला और ऊर्जावान बनता है। वहीं प्राणायाम और ध्यान मन को एकाग्र तथा तनावमुक्त करने में सहायता करते हैं।योग हमें वर्तमान क्षण में जीना सिखाता है और आत्मविश्वास को बढ़ाता है।आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी यह स्वीकार करता है कि योग अनेक जीवनशैली संबंधी समस्याओं को नियंत्रित करने में सहायक हो सकता है। योग की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके लिए किसी विशेष साधन या स्थान की आवश्यकता नहीं होती।इसे हर आयु का व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार अपना सकता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में कुछ समय योग के लिए निकाले,तो न केवल उसका स्वास्थ्य बेहतर होगा,बल्कि समाज में शांति,अनुशासन और सकारात्मकता का वातावरण बनेगा।योग भारत की अमूल्य धरोहर है,इसे केवल एक दिवस तक सीमित न रखकर जीवन का अभिन्न अंग बनाना ही सच्चे अर्थों में योग का सम्मान है।योग केवल शरीर को स्वस्थ नहीं बनाता बल्कि जीवन को संतुलित,सार्थक और आनंदमय बनाता है। मुख्य अतिथि कृष्णा पाहुजा व अध्यक्ष राजश्री यादव ने भी योग की महत्ता पर विचार रखे।परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया।प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा ,शोभा बत्रा ,सुधीर बंसल कमला हंस, संतोष धर ,प्रतिभा कटारिया प्रवीना ठक्कर आदि ने मधुर भजन सुनाए। प्रदेश अध्यक्ष योगी प्रवीण आर्य ने प्रखर राष्ट्रवादी नेता,महान चिंतक,भारत की एकता और अखंडता के लिए अपना बलिदान देने वाले जनसंघ के संस्थापक श्रद्धेय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी बलिदान दिवस पर वैचारिक श्रद्धासुमन अर्पित किये।

पुनःरुत्थान युग का द्रष्टा– महर्षि दयानन्द सरस्वती

ऋषि दयानन्द के जीवन, कार्यों तथा उनके विचारों पर अनेक भारतीय तथा पाश्चात्य लेखकों ने समय–समय पर अपनी लेखनी चलाई है। पाश्चात्य लेखकों की कुछ सीमाएँ तथा पूर्वाग्रहग्रस्त दृष्टि अवश्य रही है, जबकि भारत के कुछ ऐसे लेखकों और विश्लेषकों ने, जो आर्यसमाज से औपचारिक रूप से कभी सम्बद्ध नहीं रहे, अपनी–अपनी दृष्टि और क्षमता से ऋषि दयानन्द के चिन्तन का सफलता से मूल्यांकन किया है, साथ ही निखिल मानवता को दिये गए उनके सन्देश का समीक्षण किया है। डॉ. रघुवंश उन समीक्षकों में से एक थे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के विगत अध्यक्ष डॉ. रघुवंश ने अपने अंग्रज श्री यदुवंश सहाय की पुस्तक 'महर्षि दयानन्द' की प्रस्तावना के रूप में 'पुनरुत्थान युग का द्रष्टारू दयानन्द' शीर्षक एक विशद लेख लिखा। महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों और उनके जीवन–दर्शन की व्याख्या और विवेचना में यह लेख अपना विशिष्ट स्थान रखता है। स्मृतिशेष डॉ. भवानीलाल भारतीय जी की दृष्टि में, विद्वान लेखक डॉ० रघुवंश ने अपने लेख में ऋषि दयानन्द के वैचारिक पक्ष का विस्तृत मूल्यांकन कर निम्न निष्कर्ष निकाले है–

"१. **ऋषि दयानन्द** की प्रगतिशील विचारधारा और उनके राष्ट्रोन्मुख कार्यक्रम पश्चिमी चिन्तन से कथमपि प्रभावित नहीं रहे। उनकी समस्त प्रेरणाएँ भारतीय शास्त्र तथा दर्शन से अनुप्राणित रहीं।

२. **अपने गुरु विरजानन्द** से ऋषि दयानन्द ने जो पाठ सीखा उसमें युक्ति, तर्क एवं बुद्धि पर आधारित ऋषि कृत ग्रन्थों को सर्वोपरी मान्यता देने का विचार नितान्त महत्वपूर्ण था। इसी के द्वारा वे सत्यासत्य, धर्माधर्म तथा न्याय–अन्याय की परख कर सके थे। इस प्रकार वे शास्त्रों में किये गये अवान्तरकालीन मिश्रण (प्रक्षेप) का समुचित विचार कर सके।

३. **दयानन्द की दृष्टि** में सत्य ज्ञान के पर्याय होने के कारण वेदों की सर्वोपरी मान्यता है। उन्होंने वेदों के नित्यत्व और अपौरुषेयत्व की सिद्धि युक्ति एवं तर्क से की।

४. **ऋषि दयानन्द का** सर्वोपरी जोर बुद्धिवाद पर था। जो हमारे विवेक को स्वीकार्य नहीं, उसे त्यागने में हमें क्षणभर भी विलम्ब नहीं करना चाहिए। इस प्रकार वे विवेक और बुद्धि के जबरदस्त पैरोकार बने।

५. **ऋषि दयानन्द ने** भारतीय समाज में व्याप्त निराशा, निष्क्रियता तथा पलायनवादी मनोवृत्ति का विरोध कर पुरुषार्थ तथा कर्मण्यता को प्रोत्साहन दिया। इससे जाति में व्याप्त हताशा, निराशा तथा निष्क्रियता दूर हुई।

६. **मध्ययुगीन व्यक्तिपरक** धर्म, दर्शन तथा अध्यात्म को समाजोन्मुखी बनाकर व्यष्टि के साथ–साथ समष्टि हित की बात कही। सामाजिक हित का चिन्तन करनेवाले अपने युग के वे प्रथम महापुरुष थे।

७. **दयानन्द समन्वयवादी** इस अर्थ में नहीं थे कि हर किसी मत या आचार्य की यथोपदिष्ट बातों को, चाहे वे युक्ति, विज्ञान तथा सृष्टिक्रम के प्रतिकूल क्यों न हो, समन्वय के नाम पर स्वीकार कर लें। वे सत्य को सत्य, न्याय को न्याय तथा धर्म को धर्म कहने के पक्ष में थे। असत्य, अधर्म तथा अन्याय से उन्होंने जीवनपर्यन्त समझौता नहीं किया।

८. **दयानन्द के लिए** आधुनिक विज्ञान सदा ग्राह्य रहा। वे धर्म और विज्ञान तथा आध्यात्मिकता और भौतिकता के समन्वय के पक्षपाती थे।

९. **दयानन्द की** दृष्टि में निखिल मानव जाति का धर्म एक है, जो नैतिक मूल्यों की सबके द्वारा स्वीकृति का पर्याय है। मत, पन्थ, सम्प्रदाय आदि का गठन मनुष्य–मनुष्य में विभाजन पैदा करने के लिए किया गया है। इस दृष्टि से आधुनिक विचारकों का 'सर्वधर्म समभाव' का नारा नितान्त खोखला तथा अर्थहीन है। जब मानव मात्र का धर्म एक ही है तो विभिन्न धर्मों की कल्पना कर उनमें समन्वय की तलाश आकाशकुसुम को प्राप्त करने के तुल्य है।

१०. **उपर्युक्त धारणा** का विस्तार कर उन्होंने बताया कि धर्म को सत्य, अहिंसा, न्याय, करुणा, सर्व भूतहित जैसे सार्वभौम मूल्यों की स्वीकृति से परखा जाना चाहिए, न कि पूजा–उपासना के बाह्य प्रकारों तथा सम्प्रदाय विशेष में स्वीकार्य किये जाने वाले कर्मकाण्डों के आधार पर। पूजा–पद्धतियों तथा कर्मकाण्ड की अनेकता ने मानव जाति को भिन्न–भिन्न खेमों में स्थानबद्ध कर दिया है।

डॉ. रघुवंश ने उपर्युक्त बिन्दुओं पर आधारित दयानन्दीय दर्शन का जो विश्लेषण किया है उससे उनके इस चिन्तन तथा विश्लेषण का युक्तिसंगत होना स्पष्ट लक्षित होता है।"

(स्रोत– 'ऋषि दयानन्दरू सिद्धान्त और जीवन दर्शन', पृ.६–७,
लेखक– डॉ. भवानीलाल भारतीय, प्रस्तुतिरू राजेश आर्य)

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर के नवनिर्वाचित प्रधान मास्टर चुनी लाल जी का अभिनंदन करते अनिल आर्य,सुभाष बब्बर,पिंकी आर्य व सौरभ गुप्ता।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474
से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970